ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

''नरेश मेहता के खण्ड–काव्यों का विवेचनात्मक अध्ययन''

डॉ0 शशि बाला रावत

हिन्दी – विभाग असि0 प्रोफेसर राजकीय महाविद्यालय अगस्त्यमुनि जिला– रूद्रप्रयाग, उत्तराखण्ड।

नरेश मेहता ने अपने खण्ड–काव्यों की रचना पौराणिक आख्यानों के आधार पर, समकालीन परिवेश के परिप्रेक्ष्य में की है। मेहता जी ने अब तक चार खण्ड–काव्यों की रचना की है :–

1. संशय की एक रात– 1962
2. महाप्रस्थान– 1965
3. प्रवाद–पर्व – 1975 में मुद्रित, 1977 में प्रकाशित.
4. शबरी– 1977

1– ''संशय की एक रात''

मेहता जी ने अपने प्रथम खण्ड–काव्य ''संशय की एक रात'' में राम–कथा को नई दृष्टि से उभारा है। राम जो भारतीय संस्कृति के मेरूदंड बन चुके हैं। अब तक राम का जो भी चित्रण हुआ, उन्हें भील, भाक्ति और सौंदर्य का अद्वितीय, संयोग बनाकर प्रस्तुत किया गया है। वहीं राम अपने जय–पराजय को लेकर चिंतित हैं, किंतु ''संशय की एक रात'' के राम के समक्ष अन्य प्रकार का सं ाय हैं। मेहता जी ने कहा है कि अपने विषेश प्रयोजन के लिए ही राम–कथा का मैंने वह स्थल चुना, जो घटनाहीन है। किंतु मेरी रचना–संभावना के लिए उर्वर राम जिस द्विविधात्व को प्रस्तुत करते हैं। उसके लिए यही उपयुक्त स्थल था। राम–रावण से युद्ध करने की तैयारी के उपरान्त रामे वरम् के सिंधु–तट पर पहुंच गये हैं। सेतु–बंध अंतिम रूप में तैयार हो चुका है।

दूसरे दिन लंका पर अभियान के लिए सेनाएं उद्यत हैं। लक्ष्मण अपनी संकल्पित प्रज्ञा, वर्चस्वी निश्ठा और इच्छा पर वि वास रखते हुए आगे बढ़ते चलने में आस्था करते हैं तथा दार्शनिक धरातल पर राम को युद्ध का औचित्य बतलाते हैं। अंततः बड़े ही विव ा भाव से राम युद्ध के निर्णय को स्वीकार करते हैं:–

''ओ मेरे विवके,
मुझसे मत प्रश्न करो
प्रश्नों की बेला अब नहीं रही
अब मैं केवल प्रतीक्षा हूँ
कवचित कर्म हूँ

www.ijahms.com

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

प्रतिश्रुत युद्ध हूँ।

निर्णय हूँ, सबका सबके लिए।''

प्रस्तुत काव्य में राम, लक्ष्मण, विभीशण और हनुमान सभी पात्र आधुनिक बोध में मंडित हैं। राम आधुनिक प्रज्ञा के प्रतीक हैं। लक्ष्मण का चरित्र राम की तरह भांकालु नहीं हैं। राम जहां मानवीय विकल्पों के पुल हैं, सं ाय और प्र नों से युक्त हैं। किंतु राम के माथे पर चिंता की रेखा नहीं देख सकते। काव्य की भाशा संस्कृतनिश्ठ है। फारसी और उर्दू के भाब्द तो इसमें बिल्कुल नहीं है। ''सं ाय की एक रात'' स्वातंत्र्य युग की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। एक विवके ाील और प्रज्ञा–सम्पन्न महा–मानव चिंता के रूप में अपनी समग्रता में अवतरित हुए हैं। अतः यह काव्य मूल्यों और मान्यताओं के ऊहापोह को प्रस्तुत करने वाला काव्य है। परस्पर संघर्श, विपरीत मूल्यों और मान्यताओं को, समकालीन मूल्यों को कसौटी पर कसते हुए एक फेरबदल किया है।

2– ''महाप्रस्थान''

''संशय की एक रात'' में युद्ध की बर्बरता और अमानवीयता की कल्पना से राम के मन में युद्ध के पूर्व सं ाय उत्पन्न होता है। यद्यपि युद्ध में पाण्डव विजयी होते हैं, किंतु उस युद्ध में हुए भयानक नरसंहार के परिणामस्वरूप उसका भोग उनके लिए संभव नहीं हो सकता। यह अनासक्त मनःस्थिति होती है। अतः अत्यन्त स्पश्ट रूप में समस्याओं के उलझे सूत्रों को, विरोधी गतिविधियों को देख सकते हैं। हिमालय की ओर महाप्रस्थान करते हुए पाण्डव दल निर्वेद स्थिति में आत्मचिंतन द्वारा जीवन की अनसुलझी गुत्थियों को विवेकपूर्ण ढंग से व्याख्यायित करते हैं। धर्मराज युधिश्ठिर कभी नियन्ता, कभी काल चक्र, और कभी धर्म चक्र के बारे में सोचते हुए आगे बढ़ते हैं। दूर, बहुत दूर, निर्जन, उजाड़ हिमरा ि ा में पाण्डव दल चींटी जैसा रेंगता दिखायी देता है।

''अब केवल हिम की

उजाड़, दुर्दम्य, पाद्यरी, एकांतिकता

जिस पर,

पतली पिपीलिका– रेखा–सा चलता

नतशिर बन्दी–सा,

पाण्डव–दल''

तीन खण्डों में विभाजित ''महाप्रस्थान'' में कथन गौण हैं। परंतु पात्रों के मनोवि लेशण को मेहता जी ने अधिक महत्व दिया है। प्रत्येक पात्र की अतरंग भावनाओं के उतार–चढ़ाव का वि लेशण बहुत बारिकी से कवि ने किया है। धर्म का संकल्प लेकर बढ़ने वाले युधिश्ठिर पाण्डवता के दुर्भाग्यों के आदि स्रोत भी हैं। जिनके हाथों से अभी भी पूत गन्ध आती है। सच

www.ijahms.com

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

तो यही है कि युधिश्ठिर राज्यान्वेशी नहीं मूल्यान्वेशी हैं। उन्हें मनुश्य में वीराने देवता में सदा वि वास रहा है। भरी–सभा में द्रौपदी का अपमान इसलिए सहन किया, क्योंकि –

''सामने वाला यदि आवेश में
पशु हो गया तो
विवके के रहते
प्रतीक्षा करो
उसके पुनः मनुश्य होने की।।''

पाण्डवता की वज्र सरीखी देह वाले भीम आहत तन, अपमानित मन को लेकर घिसटते आगे बढ़ते हैं। उन्हें यह मालूम होता है कि दुर्योधन की जांघ पर प्रहार करना तथा उसे परिणामस्वरूप अनैतिकता का लांक्षन सहना सब व्यर्थ गया। युधिश्ठिर अंतर्मुखी चिंतक की भांति द्रौपदी को खंडित न वर संसार की वास्तविकता से परिचित कराते हैं। –

''स्मृतियों में
जल चित्रों में बारम्बार तैर आने वाला
यह संसार.....
विगत का केवल भ्रम है।''

द्रौपदी के चरित्रांकन में कवि ने नारी हृदय को प्रस्तुत किया है। उनका व्यक्तित्व सहज, कोमल भयभीत होता है। उसके अन्तस को प्रकट कर वह नारी–भ्रम को चित्रित कर सकता है। कवि युधिश्ठिर के द्वारा ऐसी राज्य–व्यवस्था का विरोध किया है, जिसमें व्यक्ति का स्वत्व हीन लिया जाता है। क्योंकि धर्म का उत्स उस राज्य में नहीं, व्यक्ति की प्रज्ञा में होता है।

3– ''प्रवाद पर्व''

गहन अन्तर्मन्थन, वैचारिक ऊहापोह एवं भावात्मक उतार–चढ़ाव की दृश्टि से ''संशय की एक रात'' का अगला चरण है। ''प्रवाद पर्व'' में एक साधारण अनाम की तर्जनी का महत्व घोशित करते हुए उसके विश्वास की रक्षा के लिए, पार्शद के निर्णय को अस्वीकार, सीता को वन का निश्कासन दे देते हैं। ''प्रवाद–पर्व'' में रामायण के प्रसिद्ध प्रसंग एक साधारण धोबी द्वारा सीता की चरित्र–मर्यादा पर अंगुली उठाये जाने तथा राम द्वारा सीता को निश्कासित करने से है। यद्यपि राम द्वारा सीता को निर्वासित किया जाना उचित न था, किंतु उस तथ्य को कवि ने नहीं उभारा है। अतः राम द्वारा सीता के साथ किए गए अन्याय की बात दबी रह जाती है। यदि ''महाप्रस्थान'' में राज्य–व्यवस्था की अकूत भाक्ति–सम्पन्नता के बीच पिसती जनता के संकटों की व्याख्या है, तो ''प्रवाद–पर्व'' में सामान्य जन की तर्जनी का महत्व प्रतिपादित हुआ है। राम की भी यही स्थिति है। नरे ा मेहता ने इस आख्यानक काव्य के माध्यम से राजनीति, प्रशासन, राज्य में सामान्य जन की समुचित एवं तार्किक व्याख्या प्रस्तुत की है। कवि का

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

अखण्ड विश्वास है कि साधारण जन की चेतना को रौंदने का प्रयास कभी भी अंततः सफल नहीं होता। कवि यह स्वीकार करते हैं कि राज्य–तंत्र और इतिहास को चुनौती देने वाली एक और ताकत होती है, जो इतिहास कहलाती है। यथा–

''परन्तु प्रश्न में उठा
अनाम या
मनुश्य मात्र का हाथ
प्रति इतिहास होता है राम।।''

इसीलिए राम उस अनाम जन की तर्जनी को महत्व देते हैं। उनके अनुसार एक साधारण जन की तर्जनी चुनौती के रूप में मानी जानी चाहिए। राम की सभा में इस समस्या पर विचार किया जाता है कि एक साधारण धोबी ने सीता जैसी निश्कलंक पावन एवं महिमामयी नारी पर भांका की अंगुली उठाकर कितना दुःसाहस किया है। तो राम इस समस्या को बिल्कुल भिन्न प्रकार से ग्रहण करते हैं। मंत्रीगण, भरत एवं लक्ष्मण धोबी द्वारा किये गये दोशारोपण को अनधिकार चेश्टा और घोर अपराध व राजद्रोह घोशित करते हैं।

इस काव्य का महत्व डॉ0 संतोश कुमार तिवारी के भाब्दों में निरूपित किया गया है कि वास्तव में नयी कविता के श्रेश्ठ आख्यात्मक काव्यों में ''प्रवाद पर्व'' की गणना की जा सकती है। क्योंकि वह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का जानदार दस्तावेज हैं।''

4– ''शबरी''

शबरी खण्ड–काव्य में कवि नरे ा मेहता ने त्रेता युग की व्यथामयी दीना–नारी शबरी की आध्यात्मिकता चेतना का वर्णन किया है। इस दे ा में जाति वर्ण की दृढ़ व्यवस्था ने बहुत–सी गति ाीलता को अवरूद्ध किया है। भाूद्र सेवक ही नहीं अस्पृश्य भी समझा जाने लगा है। मूल रूप से मेहता जी ने प्रस्तुत काव्य में जाति–व्यवस्था की विशमता को प्रद ित किया है। संपूर्ण कथा को कवि ने पांच छोटे–छोटे खण्डों में विभक्त किया है। त्रेता, पम्पासर, तपस्या, परीक्षा, दर्शन आदि नाम भाबरी के आत्मिक उन्नति से सम्बद्ध हैं। कवि ने शबरी के उस युग को चित्रित किया है जिस युग में भाबरी का समाज त्रेता में बदल गया था और अरण्य की ग्राम सभ्यता, नगर सभ्यता, में बदल गयी थी। इन्हीं से मिलती–जुलती एक शबर जाती थी, जो मनुश्यता से दूर विंध्य वनों में रहती थी। ऐसी ही भाबर जाति में श्रमणा का जन्म हुआ था, किंतु आरम्भ से ही उसे जघन्य कृत्यों के प्रति घृणा थी। उसे परिवार के लोग हत्यारे लगते थे, जो हमे ाा काले तन पर लंगोटी कसके जीव–हत्या के लिए तैयार रहते थे। न जाने किस जन्म के पुण्य के फलस्वरूप उसके मन में विचार उत्पन्न होते हैं :–

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

''कौन जन्म का पुण्य जगा
श्रमणा भाबरी के मन में.....
पाप कर्म ही लिखा हुआ है
क्या मेरे जीवन में।''

शबरी जब रक्त से भीगे हथियार नदी में साफ करती थी, तब वह एकान्त में प्रकृति के सौन्दर्य को देखकर सोचा करती थी कि ई वर ने कितनी मधुर और सुन्दर वस्तुएं बनायी हैं, परंतु मनुश्य कितना पापी है, जो पाप–कर्म में ही लीन रहता है। श्रमणा नि चय कर लेती है कि इस प्रकार का जीवन व्यतीत करने से तो प्रभु की आराधना करना ही श्रेश्ठ है। अन्ततोगत्वा शबरी अध्यात्म–पिपासा लेकर पारिवारिक स्नेह–तंतुओं को तोड़कर पम्पासर वन में ऋशि मतंग के आश्रम में पहुंच जाती है। ठाकुर–प्रतिमा के सम्मुख तन्मय भाव से कीर्तन करना और सभी कर्मों को प्रभु का श्रृंगार समझ कर सम्पादित करना उसका नित्य–नियम था। उसे प्रकृति के सुन्दर और परम सत्ता का आभास मिलता है। वह यह समझती है कि इस सृश्टि का कोई निगूढ़ अर्थ अवश्य है–

''कोई तो होगा नभ में
जल में, थल में, या हम में,
जो गंध समीरण बनकर
है घूम रहा कण–कण में।''

ऋशि मतंग ने शबरी की सम्भावना को पहचाना है और उसकी अगाध भक्ति में पूर्ण विश्वास है। मतंग का चरित्र एक संकल्पी का चरित्र है।

संदर्भ सूची :–

i. नरेश मेहता के काव्य का अनु ीलन– पृश्ठ संख्या–36
ii. नरेश मेहता– व्यक्ति एवं रचनाकार– पृश्ठ संख्या–37
iii. नरेश मेहता– 'शबरी' पृश्ठ संख्या– 45

www.ijahms.com